



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

दैनिक संकेत

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... ७ कॉलम..... ३-६

## हृकृति वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म

### ● 40 किंटल प्रति हेक्टेएर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

हिसार, 22 दिसंबर (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित



मटर की किस्म का फाइल फोटो व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह।

### इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण बर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

की जा चुकी हैं। यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का

### कम अवधि में पककर होती है तैयार

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रखी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (त्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुरियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी

उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है कि इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गर्भी और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 किंटल प्रति हेक्टेएर एवं अधिकतम पैदावार 40 किंटल प्रति हेक्टेएर तक आंकी गई है।

### उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए विकसित

रबी में बोइ जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं।

प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

*दूरी के भए नृ*

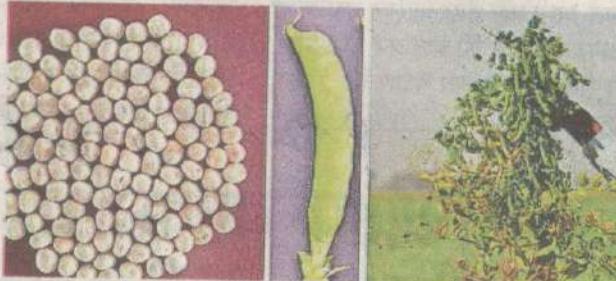
दिनांक २३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या २ कॉलम ३-५

## एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 से 40 विवंटल प्रति हेक्टेयर तक मिलेगी दाना मटर की अधिकतम पैदावार

भास्कर न्यूज. हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी. - 1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम कर दी है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी किया गया है।

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और



एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई मटर की फसल।

भाविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आहान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विवि के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जर्वंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

■ उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित: रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए

अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं। विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम

आकार व थोड़ी झुरियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है।

इस किस्म की एक और खासियत यह है कि इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके बाद ली जाने वाली फसलों के लिए लाभदायक है। यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....प.ज.। बै. कैसरी  
दिनांक २३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....७ कॉलम.....।-५

### 'हृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428'

हिसार, 22 दिसम्बर (ब्लूरो):  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय



मटर की किस्म का फाइल फोटो।

विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

#### इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डा. राजेश यादव के नेतृत्व में, डा. रविका, डा. नरेश कुमार और डा. ए.के. छावड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डा. रामधन, डा. तरुण वर्मा एवं डा. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

#### कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काशत की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बीनी किस्म है व इसके दाने

द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समा सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्मों विकसित की जा चुकी हैं।

**उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की है विकसित**

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया गया है, जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं।

स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नाइट्रोजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 से 40 किंतु प्रति हैवटेयर तक आंकी गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
दौरे भूमि  
दिनांक २३.१२.२०२१ पृष्ठ संख्या २.....कॉलम २-४.....

**उत्तराखण्ड** दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया

कलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि पर हर्ष जताया

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

## हिसार कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म, प्रति हेक्टेयर होगी 40 किंवंटल की पैदावार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर को नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि हासिल की है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया गया है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहवाग विभाग की फलस्वता मानक, अधिसूचना एवं अनुभावन केंद्रीय उप-समिति ने यह टिल्ली में आयोजित बैठक में नई किस्म को अधिसूचित ब जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपाति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर हर्ष जताया है। इससे पहले कृषि वैज्ञानिकों ने दाना मटर को अपांता, जबांती, उत्तरा, एचएफपी-9426, हारियल, एचएफपी-529 व एचएफपी-715 किस्में विकसित की हैं।

नई किस्म उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए मुफ़्ती



कर्तन यांती गांठ और नाडटोजानेस गतिविधि ज्यादा होती है जिससे इसकी प्रक्रिया से नम्रता स्थापित करने की सहायता आयोजित है जिसके उत्तरान ली जाने वाली

फसलों के लिए भी लाभदायक है। इससी ओसत पैदावार 26 से 28 किंवंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 किंवंटल प्रति हेक्टेयर तक आकी गई है।

रोडी में योई जाने वाली दाना मटर की पैदाएँ एक.पी.-

1428 किस्म के भारत के उत्तर-पश्चिम में दानों के

प्रतियोगी उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड राज्य शामिल है। इसकी

उत्तराखण्ड निवेदक भी, एसके सहयोग ने कहा कि यही में विविध

क्षेत्रों में काशल यों जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की

खासियत यह है कि इसकी कसरत एवं अधिकतम पैदावार 123 दिन में

प्रक्रिया से पैदायी हो जाती है। यह ही प्रक्रिया से सेवन दूरी वाली योग्य

किस्म है वह इसके दाने कीम रोग के सहयोग आकार य योही खुर्दी

एवं हल्के बेनकाकर होते हैं। इसके पौधे सोधे बढ़ने वाले होते हैं

इसलिए फलियां लगने के बाद गिरे नहीं हैं, जिससे इसकी

उत्पादकता नई घटती प्रकार भी आसान हो जाती है। इस किस्म

की एक और खासियत यह है कि योग्य इसकी जड़ी में नक्कान स्थापित

महान लाइंग

दाना मटर की एचएफपी-1428 विश्वविद्यालय के दानान अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के लंगूर में डॉ. रविका, डॉ. वरेश कुमार तथा डॉ. पंक्ते छावड़ा ने विकसित की है। इस उत्पादकी ने डॉ. राजेश यादव डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रमिल कापूर का जीवित योगदान दिया है।

**दोगोष्ठीक लक्ष्मा अधिक**

यह किस्म सेपेट तूर्मी, एसटोकावटा ब्लाइट तथा जड़ जाल जैसे रोगों की परिवर्ती है एवं इसमें दुकुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में पूर्ण और घटी छेदक कीटों का प्रभाव भी

पहले वाली किस्मों की तुलना में कम होता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... उमा उजाला.....

दिनांक २३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....। कॉलम.....। ३

### हृकृषि के वैज्ञानिकों ने विकसित की मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428

अमर उजाला ब्यूरो

40 किंवंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई

अधिकतम पैदावार

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हृकृषि) के कृषि वैज्ञानिकों ने दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428 विकसित की है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि इससे पूर्व विविहारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एचएफपी-9426, हरियल, एचएफपी-529 व एचएफपी-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की विकसित : रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया गया है, जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है : विवि के

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 26-28 किंवंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 किंवंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

रोगरोधक क्षमता अधिक : यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता

है। इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

इन वैज्ञानिकों का योगदान : यह किस्म कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. एके छाबड़ा द्वारा विकसित की है। इसमें डॉ. रामधन, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा।



दाना मटर की नई किस्म।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पैदानिक जागरूक  
दिनांक २३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....७ कॉलम.....।-२

### मटर की नयी किस्म से किसान होंगे मालामाल



दृष्टिकोण के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार  
एचएफसी 1428 मटर का पौधा

अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित  
किया गया है।

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफसी 1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। जिससे उत्तर-पश्चिमी भारत कि सब्जी उत्पादकों को मालामाल करेगी, जिसका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 40 किलोटन आंका गया है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सैनिक जागरूक

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या..... 3 कॉलम..... 1-2

## रोग प्रतिरोध क्षमता से लैस मटर की नई किस्म की गई विकसित

जागरण संवाददाता, हिसार  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों  
ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग  
प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428  
विकसित कर एक और उपलब्धि  
को विश्वविद्यालय के नाम किया  
है। दाना मटर की इस किस्म को  
विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी  
एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन  
अनुभाग द्वारा विकसित किया गया  
है। विश्वविद्यालय द्वास विकसित इस  
किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं  
किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं  
सहयोग विभाग की फसल मानक,  
अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय  
उप-समिति द्वारा जारी भी कर दिया  
गया है। कुलपति प्रो. समर सिंह ने  
विज्ञानियों को बधाई देते हुए बताया  
कि इससे पूर्व दाना मटर की अपर्णा,  
जयंती, उत्तरा, एचएफपी-9426,  
द्वारियल, एचएफपी-529 व  
एचएफपी-715 किस्में भी एचएयू ने  
ही विकसित की है।

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर  
की एचएफपी-1428 किस्म को भारत  
के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों

हरियाणा कृषि विवि के विज्ञानियों  
ने विकसित की किस्म, पंजाब,  
हरियाणा, दिल्ली सहित अन्य  
राज्यों में देगी अच्छी पैदावार

### कम समय में तैयार होगी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक  
डा. एसके सहरावत ने बताया कि रबी  
में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली  
दाना मटर की इस किस्म की खासियत  
यह है कि इसकी फसल कम अवधि  
(लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो  
जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों  
वाली बीनी किस्म है व इसके दाने पीले-  
सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व  
थोड़ी द्वुरियों एवं हल्के बेलनाकार होते  
हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं  
इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते  
नहीं हैं।

के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए  
अनुमोदित किया गया है। जिसमें  
जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग,  
पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान,  
पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड  
राज्य शामिल हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पैनक मासिक

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या.....2 कॉलम.....7

## पराली से खाद तैयार कर किसान कर सकते हैं मशरूम का उत्पादन

हिसार। किसान खेती के साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना जरूरी है। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी।

पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एग्रिकल बाइसपोरस प्रजाति की खेती बढ़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बीमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में जानकारी दी। डॉ. राकेश चूध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी। मौके पर एचएयू हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चूध, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजूत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र सिहांग मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का.नाम.....

नित्य शक्ति टाइम्स

दिनांक २२.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

— नित्य शक्ति टाइम्स ( हिसार ) मंगलवार, 22 दिसम्बर, 2020 —

### हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी-1428 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

हिसार, ( नित्य शक्ति टाइम्स ) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि



वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित-रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है कि स्म-

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काशत की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लागभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुरियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगाने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है।

इस किस्म की एक और खाशियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी

औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

**रोगरोधक क्षमता**  
अधिक-यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग-दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छावड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

जारी त. समाचार

दिनांक

२५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....

कॉलम.....

# हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428

40 विकेंद्र प्रति  
हैक्टेयर तक आंकी  
गई अधिकतम  
पैदावार



विश्वविद्यालय के कुलपाति प्रोफेसर रामर शिंह व मटर की किस्म का फोटो। (छाया : रोजी)

हिसार मेयाली नलना, 22

एसप्पर (राज पराशर/देवानन्द  
मोनो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा  
कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों

ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग  
प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428  
विकसित कर एक और डालनीय को  
विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना  
मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय  
के अनुबोधिकों एवं पौध प्रज्ञन  
विभाग के दलान अनुभाग द्वारा  
विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय

सरकार के कृषि एवं संस्कृत विभाग  
मंत्रालय के कृषि एवं संस्कृत विभाग  
को 'सरसल मानक, अधिकृत' एवं  
अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई  
दिल्ली में आयोजित बैठक में  
अधिकृत व जारी कर दिया गया है।  
विश्वविद्यालय के पौधप्रोफेसर  
समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस  
उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में

विकसित : रोग में थोड़ी जाने वाली  
दाना मटर की एचएफपी-1428  
किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम  
मैदानी इलाकों के स्थिति क्षेत्रों में  
कास्त के लिए अनुमोदित किया गया  
है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी  
भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली,  
राजस्थान, पंजाबी उत्तर प्रदेश व  
उत्तराखण्ड राज शामिल हैं।

कम अवधि में पक्कर तैयार  
होती है किस्म : विश्वविद्यालय के  
अनुबोधन निदेशक डॉ. एस. के.  
सहायत ने बताया कि यह में स्थिति  
क्षेत्रों में कास्त की जाने वाली दाना मटर  
को इस किस्म को खासियत दी है कि  
इसकी फसल कम अवधि (लाखण  
123 दिन) में पक्कर तैयार हो जाती है।

गह ऐ पक्कर एवं मूँद पूँजों वाली  
थीनों किस्म है व इसके दाने पैले-  
सोन्द (ब्रीम) रोग के मध्यम आकार व

थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के केलनकार देते  
हैं। इसके पीछे सौंधे बहुने दाने देते हैं  
इसलिए फसलियां लगाने के बदल गिरते  
नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादनता नहीं  
घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती  
है। इस किस्म की एक और खासियत  
यह है कि इसकी जड़ों में नक्कान  
स्थापित करने वाली गड्ढे ओर  
नाईट्रोजेनस गैसिंग कृत अणिक  
होती है, जिसके कारण इसको पर्यावरण  
में नक्कान स्थापित करने की क्षमता  
अवैधिक है जोकि इसके उत्पादन नहीं  
जाने वाली फसलों के लिए भी  
लाभदायक है। इसको औसत पैदावार  
26-28 हिंडल प्रति हेक्टेएर एवं  
अधिकतम पैदावार 40 विकेंद्र प्रति  
हेक्टेएर तक आंकी गई है। इस  
उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामर  
जाट, डॉ. रमण लर्मा एवं डॉ. प्रोमिल  
कर्मू का भी विशेष योगदान रहा है।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
उत्तरभैंडे  
दिनांक .....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

## हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म

हिसार/प्रबोन कुमार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय के नाम की है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति, द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल,

एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड राज्य शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काशत की जाने वाली मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (ऋम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुरियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

## समाचार पत्र का नाम....

~~1212 455~~

दिनांक २२.१२.२०२० पृष्ठ संख्या १ कॉलम १

**हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने विकसित  
की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428**

मिट्टी पाल्य नहीं, हिसारा हरियाला कृषि विधिविद्यालय के कृषि वेतनकारों ने इस वर्ष मट्ट मट्ट ज्ञे नहीं गेंगे ताकारोंको किम एवं एक-एक पौं। 1428 क्रिकेट कर एक एवं उत्तमतम् को विधिविद्यालय के बाप किया है। याना मट्ट को इस क्रिस्म नो विधिविद्यालय के अनुशासकी एवं पौं प्रबन्धन विभाग के इकलौत अन्यम् द्वारा विधिविद्यालय को यथा इस विधिविद्यालय द्वारा विधिविद्यालय के क्रिस्मों को भारत सरकार के कृषि एवं क्रिस्मान कल्याण परिवर्तन के द्वायि एवं मट्टमय विधान की फसल माना, अधिकारी एवं अन्यम् देश कदोर्य उप-कार्यालय द्वारा दंड दिलों में आवास वैतक में अधिकृत ज्ञ जारी कर दिया गया है।

पाना मटर की रेच एफ.पी.-  
1428 किम्ब विश्वविद्यालय के  
इलाहाबाद अनुभाग के रूप वैज्ञानिक



**उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों** के लिए की गई है विकसित। यहीं ने बोने जाने वाली टांग मट्रट की प्राप्ति पर्याप्त 1428 विद्युत योग्यता के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के विस्तार सेवों में काश्यता के लिए उत्तमतम विद्युत विद्युत योग्यता है विस्तार सेवा और कठोरता के मैदानी जल, पानी, लकड़ी, दिनी, रसायनकारी, विधिवाली जल एवं उत्तराधिकारी राज्य आगिल है।

कम अवधि में पक्का  
तैयार होती है किसा

अग्रसेवन गिरोटारा ती एस के  
साहस्रान्त रो पक्षाया कि ती ने दिलों  
देंतों में काश की जाके बही ताजा  
जटाई ती इस चिकित्सा परी विद्यालया याद  
है ती इस्तमाली पक्षामान आवाज़ी  
(लाभगत 123 डिन) ने प्राप्तकर्ता देखा  
हो जाती है। ताजा रो पक्षाक तो सापेट  
पुरानी बाली देंतों है ती उसके  
दाढ़ी देखने लागत (पक्षी) की तरफ़ क्रमां  
आवाज़ ए देंतों द्वारा देंतों का नामों  
बोलनामार थीते हैं। इसकी देंतों से  
बड़ों देंतों लेते हैं ती द्वारा देंतों  
ताजाकरी के ताज निराकरण होती है, जिससे  
इसकी जलवायिका नियंत्रण होती है  
कठाई भी अत्यन्त न होती है। इसकी  
प्रेस्सुर विवरण 26-28 डिन ती  
सेवन एवं अधिकारा देखाता है  
दिलों देंतों द्वारा देंतों नामों की



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

## समाचार पत्र का नाम.

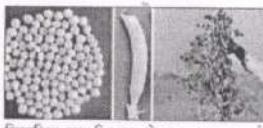
## समाज विषया

दिनांक २२.१२.२०२० पंच संख्या

.कॉलम

हकूमि ने विकसित की दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म

40 किंटल प्रति  
हेक्टेयर तक आंकी गई<sup>1</sup>  
अधिकतम पैदावार



समस्त हरियाणा न्यूज़ हिमारा। जीभरो चरण मिथि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस बर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को प्रक्षेपिता के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुव्याप्तिकों एवं पौधे प्रजनन वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर को अनुभाग द्वारा विभाग के दलदहन विभाग के दलदहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा कृषि एवं विकास कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं साहस्रग्रन्थ विभाग जी 'फलान मानग, अधिसूचना एवं अनुमोदन' के द्वारा 'समिति' द्वारा नई टिली में आयोगित वैज्ञानिकों द्वारा नई टिली में आयोगित वैज्ञानिकों द्वारा अधिसूचित व जारी कर दिया गया है विश्वविद्यालय के कूलपति प्रोफेसर-समस्त मिशन ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बर्खाएँ दी और भविष्य में भी निरन्तर प्रयोगस्वरूप रखने का आह्वान किया। उड़ोने विभाग की इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर को अपर्णा, जयरंगी, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायता ने बताया कि रखी में सिंचित क्षेत्रों में काशक की जाने वाली दाने मट्ट की इस किस्म की खासियत यह है कि इसको फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर ठैयार हो जाती है। यह ही पत्रक एवं सफेद पूलों वाली धौनी की किस्म है जो इसके दाने पोले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम अकार के थोड़ी झुर्रियों पैद एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे साथ साथ बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरो नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं यह भी असान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है कि इसकी जड़ों में नवजनन स्थापित करने वाली गांठि और नानो-जीनोस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी जड़ों से नवजनन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरान्त ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभादायक है। इसकी भीतर पैदावार 26-28 हिंटल प्रति हेक्टेएर एवं अधिकतम पैदावार 40 हिंटल प्रति हेक्टेएर तक आने वाली है।

उत्तर-पश्चिम भारत के  
मैदानी इलाकों के लिए

इन वैज्ञानिकों की मेहनत  
लाई रंग

दाना मटर की चच, एक पी. - 1428  
 किम्पु वैश्विक्यात्य के दलहन अनुभाग के  
 कपि वैज्ञानिक डॉ. गोविंद शास्त्र के नेतृत्व  
 में, डॉ. रविकीर्ण, डॉ. नंदेश कमाल और डॉ.  
 ए. के. उद्धवद्वारा विकासिती ही नह है। इस  
 उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन  
 जाट, डॉ. तनक तवसी एवं डॉ. प्रोमिल कपूर  
 का भी विशेष योगदान रहा है।

उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड गन्य शामिल हैं।  
**रोगरोधक क्षमता अधिक**

यह किस्म सफेद चूणी, एम्फोकायटा

ब्लाइट व बड़ा गलान जैसे रोपों को प्रतिरोधी है एवं इसमें रुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर को इस किसम में फैफूद जैसे रस चुम्क कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले खाली किम्बों की तुलना में बहुत कम होता।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पांच बजे  
दिनांक २२.१२.२०२३ पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर में प्रशिक्षण आयोजित

## मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्प

पांच बजे व्यू

हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम सामग्री से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से सम्बंधित तकनीकों का ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है।

ये मसाला खेती वर्षा सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ह उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आमदान के विभिन्न गाँव के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑफिसिटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिमार्गियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवश्यकों पर की जाती है जिसमें उक्का पुनः चक्र होकर उत्पन्न होता है। ये खेतों पर कृषि विज्ञान केंद्र के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है।



उन्होंने बताया कि भारत में खेत वटन मशरूम (खुम्ह) की पर्यावरक सदृश्यांगम प्रजातियों की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से खेत वटन मशरूम (खुम्ह) का विषय में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में खेत वटन मशरूम (खुम्ह) को गरद और ऊरु में उत्पादन कर प्राप्त होता है, वर्गानुसार इस खलू में तापान कम

तथा हवा में नमी अधिक होती है। इन्हीनियर अभियंत सामग्रीन ने खेत वटन मशरूम (खुम्ह) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जाह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी। अन्य वैज्ञानिकों ने मशरूम से होने वाले साध और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद

शिटपान, प्रमुखाला, नंगथला, किरमारा, सदलपुर, खाटा, बरचाला, किशनगढ़, अदामपुर, कोहली, रिंगरीखेड़ा, सोमधाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दीर्घ प्रशिक्षणार्थियों को व्यवस्थित ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम प्रदानी नेतृया कारबंग द्वारा उत्पादन बताया गया। उन्होंने बताया कि चौपांच चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए दिलाई गई। उन्होंने बताया कि चौपांच चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम के लिए विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल यज्ञ, डॉ. समीर महला, डॉ. गंगेश तुम्ह, डॉ. राकेश पूर्णपाणी, डॉ. अनिल सेनी, डॉ. जगदीप सेहता व डॉ. मंजूरी के अलावा निला बागवानी अधिकारी डॉ. मुरैद सिंहग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. भूषण सामवन, डॉ. चूरु, डॉ. ज्ञानेति ने युवाओं को खुब उत्पादन लेता जाता, रखराखाल, कौट रोग प्रबंधन, संखिक्षण व बैंक लोन आदि को विस्तृत जानकारी दी।

60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण कर्म विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑफिसिटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुमूलित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में विस्तृत, साह



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी प्रैस.....

दिनांक २२.१२.२०२३ पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

### मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्प

सिटी प्रैस न्यूज़, हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑडिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र

होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में शेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एग्रिकल बाइसपोरस प्रजाति की खेती बढ़े पैमाने पर की जा रही है। पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में 60 युवाओं ने भाग लिया। वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुध, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अजीत सांगवान, डॉ. कुंद्र, डॉ. ज्योति ने युवाओं को जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....कृषि पत्रा लोकीका

दिनांक २२.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

# मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्पणी

पराली से भी खाद तैयार  
कर मशरूम उत्पादन कर  
सकते हैं किसान

**मशरूम उत्पादन तकनीक  
विषय पर कृषि विज्ञान  
केंद्र सदलपुर में प्रशिक्षण  
आयोजित**

**वाटिका@हिसार।** किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच



दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑफिसिटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम

(खुम्ब) की एमेरिक स्वाइमोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) को शरद ऋतु में उगाया जाता है, क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों

की जानकारी दी। अन्य वैज्ञानिकों ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़े व विमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के स्थालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... सभूत दृष्टि  
दिनांक २२.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

### मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के दिए टिप्प

पराली से खाद तैयार कर  
मशरूम उत्पादन कर  
सकते हैं किसान

ममत हरियाणा न्यूज़

किसान खेतों के माथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपसी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन संबंधित तकनीकों ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये मलाह चौप्परो बग्ग मिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मदनपुर स्थित कृषि क्लियन केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी।



पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आमदानी के विभिन्न गंतव्यों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि क्लियन केंद्र सदलपुर के अधिकारी डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशोषण पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कारों के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में खेत बटन मशरूम (खुम्ब) की ऐंटोरिक्स वाईस्परेस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से खेत बटन मशरूम

### 60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के कोओआईएनटी डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिसार, माहौल, बिटपड़ा, प्रभुवाला, नंगथला, किरमारा, सदलपुर, खारा बरवाला, किशनगढ़, आदमपुर, कोहली, मिंगनेखेड़, सोंसवाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम उत्पादन प्रदर्शनी तैयार करने के दिखाई गई। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के निभिल वैज्ञानिक डॉ. कुलसल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. रामेश चूध, डॉ. राकेश सर्वगवाल, डॉ. वीरा गोपनवाल, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. अनिल सिंह, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजूत के अलावा जिला यांत्रिकी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अंजीत सांगवाल, डॉ. कुमुड़ डॉ. ज्योति ने युवाओं को खुब उत्पादन, नेखा-जोखा, रखरखाव, कीरी रोग प्रबंधन, सविराली व शैक लोन आदि को विस्तृत जानकारी दी। (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और हवा में नयी अधिक होती है। इंजीनियर अंजीत सांगवाल पहाड़ी भागों में खेत बटन मशरूम (खुम्ब) को शरद ज्यू ने खेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए दीर्घीय में उत्तमा जाता है, क्योंकि इस ज्यू में तापमान कम तथा तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों को जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

अ.जी.टी.समाचार

दिनांक .२३.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....

कॉलम.....

## मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्प

हिसार/मंगली नलवा, 22 दिसम्बर (राज परालर/देवानन्द सोनी) : किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑडिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में शेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एकोरिक्स बाईसपोरस प्रजाति की खेती बढ़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से शेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में शेत बटन मशरूम (खुम्ब) को शहद त्रक्तु में उगाया जाता है, क्योंकि इस त्रक्तु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अंजीत

सांगवान ने शेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी।

60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण : कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑडिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिसार, साहुबिलमड़ा, प्रभुवाला, नांगथला, किरमारा, सदलपुर, खारा बरवाला, किशनगढ़, आदमपुर, कोहली, मिंगनीखेड़ा, सीसबाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम उत्पादन प्रदर्शनी तैयार करने के दिखाई गई। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चूध, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. अनिल मैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंहग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अंजीत सांगवान, डॉ. कुंदू, डॉ. ज्योति ने युवाओं को खुम्ब उत्पादन, लेखा-जोखा, रखरखाव, कीट रोग प्रबंधन, सब्सिडी व बैंक लोन आदि की विस्तृत जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... उभर उजाला  
दिनांक २२.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... २ कॉलम..... ५-५

### चार साल बाद होंगे हौंटिया के चुनाव, 1634 कर्मचारी करेंगे मतदान

पिछली बार सर्वसम्मति से चुनी गई थी पूर्व कार्यकारिणी, हुआ था विवाद

अमर उजाला ब्यूरो

**प्रधान सहित 7 पदों के लिए होगा चुनाव**

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चार वर्ष बाद गैर-शिक्षक कर्मचारी संघ (हौंटिया) के चुनाव होंगे। चुनाव के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं और फार्म मैनेजर डॉ. महेंद्र सिंह मोर को इसके लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया है।

नई कार्यकारिणी का चुनाव दो वर्ष का होगा और इसमें 7 पदाधिकारियों को चुना जाएगा। पूर्व कार्यकारिणी भींग करने के बाद अब नए चुनावों के लिए जल्द ही तारीख का एलान होगा। संभवतः जनवरी के पहले सप्ताह में चुनाव हो सकते हैं। बत्त दें कि इससे पहले वर्ष 2016 में चुनाव हुए थे। इसके बाद 2018 में राजबीर सिंह प्रधान एवं उनकी पूरी कार्यकारिणी को सर्वसम्मति से प्रधान बनाया गया। हालांकि चुनाव न करवाए जाने का आरोप लगाते हुए इस मामले में काफी बवाल हुआ था।

कर्मचारी संघ के चुनाव में कार्यकारिणी के 7 पदों के लिए चुनाव होगा। इसमें प्रधान, उपप्रधान, महासचिव, संयुक्त सचिव, कोषाल्यक्ष और दो सदस्य शामिल हैं। संघ के सचिवान्वयन में प्रधान को यह शक्तियां भी दी गई हैं कि वह चुनावों के बाद 10 नामिनी चुन सकता है। इस बार एचएयू के गैर-शिक्षक कर्मचारी संघ का पंजीकरण भी करवाया गया है।

चार पैनल होंगे पैदान में : एचएयू में कर्मचारी की संख्या अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा अधिक होती है। इसलिए यहां का चुनाव अधिक रोमांचक होता है। इस बार चुनाव में चार पैनल आमने-सामने होने की संभावना है। विवि में 1634 स्थायी कर्मचारी हैं, जबकि कूल कर्मचारियों की बात करें तो इनकी संख्या साढ़े 3 हजार में भी अधिक है। विवि कैपस के अलावा प्रदेशभर में खोले गए कृषि विज्ञान केंद्रों के कर्मचारी भी इसमें शामिल हैं। एचएयू के चुनाव दो दिनों में होंगे। एक दिन विवि कैपस में और एक दिन कृषि विज्ञान केंद्रों में चुनाव करवाए जाते हैं।